

गं॥ मो जा गयि किक ज ठा मा छु तं क नू ल क नं॥ धा जा दू हा स म कू लं रु य ह्या यि रु यं क नं॥ च वं वि
व नू ल क नं॥ वि दू नं य न मू लं म॥ सु चा स न ड न मि तं॥ स व द्वा न नू य डि तं न वा धि स ह ग नं य
नो स र तं रु की व स नं॥ अ स य रा व म नू लं॥ स व रु व लि ना य कं॥ आ ह व द म रु ग व न॥ स म्भ कं य
म म व कृ या क नू॥ धा न ली म नू वा जा नी॥ स व स व स र व व हं॥ आ ह॥ सा यू सा यू म हा या हूः॥
नू व कृ मि धा न लि॥ य स्या ग व न दू मा नू न॥ वि न स्या नि रु या व्द कं॥ आयू ना हा ग्य ड न नी॥ स र वं सी

१
राग्यवचनं ॥ यद्येकं गतं चायि यूलक स्यापि विद्युत ॥ यद्यपि गुरुवत् कृत्यं न रूपं विद्युत कचि
न ॥ सशानि गुरु संचाट ॥ अग्निं जय मकृत ॥ त्रिकुसुमं सर्वयक्ति ॥ अत्र कौकुर्विनि न स्य च पदवान
क्रो ॥ लयादवा ॥ वाधिसत्तामहोदिकाः ॥ नाना नितं महासहं यद्यतां अत्र नीय ॥ ७८ ॥ नूयाद्या
त्रयदायि गाने या प्रानि सो गते ॥ स्वननमस्तु सुखमयं निदिरिवादर्यवर्ति किं न ॥ अस्यामि कः
न जीसर्वे वसिष्ठं जगता लया ॥ हविर्मुनये व्यरुहं संयत्ता नानां संयः ॥ ७९ ॥ अमलान्तरा

२
१६ नमो गताय ॥ अथिड शताचा दवजकजठाय ॥ नमः सर्वश्रवक यत्य कवद्ववाधिसः
वकाधवाड यद्वयमस्यत्यः ॥ नमो गवत यत्र मगु नवमलाकात्र निकेय ॥ अमक मनी
यते अगतायाहे न संमयकं वृद्धाय ॥ नद्यथां ॥ ३ ॥ ३ ॥ गुरुमहागुरु ग्रन्थ ३ ॥ शताच ॥ ३ ॥ ३ ॥
कजठ ॥ यिद्वजकजठ ३ ॥ यद्वजठ ३ ॥ यद्वजठ ३ ॥ यद्वजठ ३ ॥ यद्वजठ ३ ॥ यद्वजठ ३ ॥ यद्वजठ ३ ॥ यद्वजठ ३ ॥
माहा ॥ यद्वजठ ३ ॥ यद्वजठ ३ ॥ यद्वजठ ३ ॥ यद्वजठ ३ ॥ यद्वजठ ३ ॥ यद्वजठ ३ ॥ यद्वजठ ३ ॥ यद्वजठ ३ ॥

नाहयत्तु कुलस्य जीकुल्यदिति कृतं न नि कुल कालिनि प्रम रस प्रम रस प्रम रस प्रम रस
 विदु नद क नाह नाश या ल द को टी स का स द ग ल वि दू डि का ला त व स न सं गु शि न ड व न
 वि क हा ति क कालि म हा क का नि तान न का ह हा रु ति का ह क का ह वि ध म ति व ज म स्त्रिः
 का ह न प्र धा नी ति म हा का ली स द म ति द जै जीः व ज वे ना जी य म व ना जी य ना प्र धा य नि व ना
 प्र का ति वि य म हा म म न ना शि नि म हा का य वि ती म हा का न क या ह धा व नि म म स हा

नित म द व स न म न ना नू षा न या वी न श जी न न व जी ना म नू नू मा हा व हा मि त ना द रु
 श या स न कु ता ग्रा ग न कु ता न क कालि ति कु ता न म थ नि कु ता न ई व म हा का ति का सः
 य म ति का ता न त का त ना रु न म हा का त ग क हा दि ध म ति व ज म हा का त न य धा नि ती
 हा र दी र दै रु र रु र ग ट र स व ट र द व ट र वि द व ट र न ट र व ट र च ट य र मा ट य र व ना म म थ व
 मि ती क ह र कालि नि जी म न यु कालि न मू द क य कालि न क न व रु न य न क ह र काल य र म

वज्रवज्रगङ्गा वज्रकालान्तपुत्रः वज्रकालागङ्गा वज्रकालामन्त्रनाटिकागमयुक्तं व
 वज्रकालावलायितगङ्गा वज्रकालामन्त्रनाटिकागमयुक्तं वज्रकालावलायितगङ्गा वज्रकालामन्त्रनाटिकागमयुक्तं व
 सवर्मातिदहुरहसीकनसर्वविद्युः वज्रकालामन्त्रनाटिकागमयुक्तं वज्रकालामन्त्रनाटिकागमयुक्तं व
 अयमिति अयमिति अयमिति अयमिति अयमिति अयमिति अयमिति अयमिति अयमिति अयमिति
 अयमिति अयमिति अयमिति अयमिति अयमिति अयमिति अयमिति अयमिति अयमिति अयमिति
 अयमिति अयमिति अयमिति अयमिति अयमिति अयमिति अयमिति अयमिति अयमिति अयमिति

५६

लिखितं सत्त्वा नाकुरधामकलुन्दमथावलिती अकननिष्कन कनमिति अमनज
 गाद्वे अमननृपितीवजामन अमनवधलि अमनयवकलुतिनी अमनवधलि अमनयवकलुतिनी
 ननिवजिनि अमननृपितीवजामन अमनवधलि अमनयवकलुतिनी अमनवधलि अमनयवकलुतिनी
 कलुतिनी अमननृपितीवजामन अमनवधलि अमनयवकलुतिनी अमनवधलि अमनयवकलुतिनी
 अमननृपितीवजामन अमनवधलि अमनयवकलुतिनी अमनवधलि अमनयवकलुतिनी
 अमननृपितीवजामन अमनवधलि अमनयवकलुतिनी अमनवधलि अमनयवकलुतिनी
 अमननृपितीवजामन अमनवधलि अमनयवकलुतिनी अमनवधलि अमनयवकलुतिनी
 अमननृपितीवजामन अमनवधलि अमनयवकलुतिनी अमनवधलि अमनयवकलुतिनी

६

वत्सलं कृत्वा विगृह्य हस्ते गतं सह मां निव कथं ह्यवस्थितिं न धाम सुखं गतं सकृदपि ममिमां ह्य
विनष्टि नया दधी ॥ ० ॥ विश्वमात्रं नृकृत्तु नृदा कर्म नीधे का नयु नृती न धाम कथं गंतं नीधे का
कर्म नीधे नृती गतं नृका दूदयः महासुखाधिनि नृमहापायः महासाया विमोहनि मायाका
हमयः सतं नृविचयः नृधाम कनमस्तु नृविशगि दूतं नृकनयनः महाकथयि संतिहः
वीजगवत्सु वीजगानमिहः यमः मनु सप्रदाह कुनि कं वै ह्यः वजादू गथा विनीया श

सुदृढ धनि प्रिया वज्रयन्त्र महासुखः महावज्रधन नृयि नीधम धाम धाम सुखं गतं नृमर सव्य यागिनी
सर्वमनु सयुजिनः का नयम नृतिहः नृधाम सुमाहिनी विश्वगतं विश्वदू गतं नृतिहय सतु रयु
वज्रलुत मस्तु वायु मनु सप्रदाह गतं नृधाम धाम सुमाहिनी विश्वगतं विश्वदू गतं नृतिहय सतु रयु
नृतिहय सतु रयु नृतिहय सतु रयु नृतिहय सतु रयु नृतिहय सतु रयु नृतिहय सतु रयु नृतिहय सतु रयु
नृतिहय सतु रयु नृतिहय सतु रयु नृतिहय सतु रयु नृतिहय सतु रयु नृतिहय सतु रयु नृतिहय सतु रयु

जननि सगुथ त्वायदर्शकाजिती महामन्त्रादन सह माश्र सह सुगुठः गत सह सादि
महय रनाशय रद्यानय र संतय र मा जय र ना उय र ह कय र विधं सय र उ सादय र सर्व
दय पुद दान ॥ र गवतीयिं ग गोक उट दै ३ दूट इन मा मु न खाहा ॥ या गिनी गन वदि न सह
मा सर्वे न था गन समया विहि न खाहा ॥ सर्वे न था गना धि सि न खाहा ॥ अयुति ह न विद्या
खाहा ॥ अयुति ह न य राव खाहा ॥ नै मा ला का क म ति खाहा ॥ ई कीः खाहा ॥ ई द्रुः खाहाः

उं ॥ ॐ खाहा ॥ उं ती खाहा ॥ विरा क वर्ति नी खाहा ॥ चतु चक मनु ह खाहा ॥ अये नी य खा
हा ह कुति म वि खाहा ॥ ॐ ॥ विना ह मू रिव खाहा ॥ कुता न म ध ति खाहा ॥ म मा ह गन व
दि न खाहा ॥ मा ह म न र का न म वि न खाहा ॥ म म न वा सि नी खाहा ॥ म हा कि ति की ति यि य
खाहा ॥ मा ह नी खाहा ॥ वि मा ह ति खाहा ॥ मा ध नी खाहा ॥ वि मा ध नी खाहा ॥ च क वी र्य खाहा
म हा वी र्य खाहा ॥ म म ठ वी र्य खाहा ॥ न उ कि नी खाहा ॥ स्र नाम न म म गति खाहाः

वसिष्ठानुगच्छत्याह ॥ महावाधिरिति वक्तव्याह ॥ महासमयस्याह ॥ न तां कथमिति
 स्याह ॥ महासाहस्यमद्वैतीत्याह ॥ तः स्याह ॥ तु वस्याह ॥ सः स्याह ॥ तद्वत्स्याह ॥
 वक्तव्याह ॥ वक्तव्याह ॥ सर्वमज्ञा विद्याधियनस्याह ॥ यश्च वक्तव्याह ॥
 समासाह ॥ स्याह ॥ अस्याह ॥ न कर्मसर्वस्याह ॥ सर्वद्वन्द्वयनयिभ्योऽपि
 यस्मान्नस्याह ॥ सर्वद्वन्द्वयनयिभ्योऽपि यस्मान्नस्याह ॥ सर्वद्वन्द्वयनयिभ्योऽपि

वनियिस्तर्ककजद्वंद्वं द्वंद्वं द्वंद्वं द्वंद्वं द्वंद्वं नमामुतस्याह ॥ ० ॥ ॐ लोककटाक्षानिभ्यो
 का ॥ ॐ ॥ यथासाहस्यस्याह ॥ न तां कथमिति स्याह ॥ न तां कथमिति स्याह ॥
 दिमहाश्वनवा ॥ स्याह ॥ ३७ ॥ माद्यमीन ॥ कृष्णद्विपाकृष्णयूनमीति ॥ विधितय
 मागिरिभ्योऽपि यस्मान्नस्याह ॥ सर्वद्वन्द्वयनयिभ्योऽपि यस्मान्नस्याह ॥

II-47

धर्मरत्न वज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार